६१: प्रधान परिवार राज्य सभा

दिनांक -२२-०२-२०१२

प्रधान परिवार राज्य सभा का निर्वाचन, मुख्य राज्य सभाओं के १० सदस्यों की संख्या में से १-१ सदस्य का निर्वाचन होगा जिसमें कोई प्रचार आदि का खर्च नहीं है | इससे निर्वाचित १० सदस्य एक सभा को गठित करेंगे, जिसका नाम प्रधान राज्य सभा होगा | प्रधान राज्य सभा में भी निर्वाचित १० सदस्यों का अधिकार समान रूप में रहेगा | सभाओं में जितना भी कार्यवाही होगा उन सभी का समय, व्यक्तियों का नाम, स्थान और उद्देश्य उल्लिखित रहेगा | यह परिवार सभा से लेकर विश्व परिवार सभा तक प्रभावशील होने वाली विधि है | इस विधि से हर सदस्य प्रधान राज्य अर्थात एक करोड़ आदमी का परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण कार्य में व्यस्त रहेगा जिसमें पांच आयामों का संतुलन प्रधान रहेगा | उसके पश्चात रासायनिक, भौतिक संसार का संतुलन, खनिज संतुलन, खाद्यान्न संतुलन का मुद्दा रहेगा | इन कार्यक्रमों में हर सदस्य का अधिकार समान रहेगा | यह अपने ढंग से अर्थात हर सदस्य अपने ढंग से परीक्षण, निरीक्षण, सर्वेक्षण करने में स्वतन रहेगा | मुख्य मुद्दा पांचों आयाम है | हर परिवार सभा में उन उन क्षेत्र का परीक्षित लेखन प्राप्त करना कार्यकारी रहेगा | जहाँ कहीं भी असंतुलन समझ में आता है उसे संतुलित करने का अधिकार रहेगा | यह सभी सदस्यों में समान पाया जाता है | इसका प्रधान जिम्मेदारी पांच आयामों को संतुलित रखने के क्रम में शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा मुख्य मुद्दा रहेगा | यह मुद्दा अखण्डता के अर्थ में सम्पादित रहेगा | धरती अखण्ड रहने के आधार पर मानव जाति अखण्ड समाज के रूप में जीना सम्भव है | इसका आधारभूत ज्ञान मानव जाति एक, मानव धर्म एक है | इस मुद्दे पर विशेष ध्यान रहेगा | अखण्ड समाज का स्वरूप प्रधान राज्य में प्रमाणित हो जाता है | प्रधान परिवार राज्य हर एक सौ करोड़ आदमी के बीच होता है | एक करोड़ आदमी एक साथ जीने के लिये राज्य और धर्म का अखण्डता, एकता आवश्यक होता है | मानव जाति एक, मानव धर्म एक होने के आधार पर ही मानवीय व्यवस्था एक होना सम्भव है | इसका अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा, प्रकाशन का प्रमाण हर प्रधान परिवार राज्य सभा में सम्भव है | इसी क्रम में अभयता को पाना सम्भव है |

अभयता पूर्वक जीने का ज्ञान का विश्वास होने के उपरांत ही कार्य व्यवहार में होना सम्भव है | इसलिए मानवीय शिक्षा-संस्कार में मानव धर्म एक एवं मानव जाति एक होने का पूरा विकल्प प्रावधानित रहना आवश्यक है | यह विकल्प विधि से ही आता है | विकल्प, चेतना विकास मूल्य शिक्षा के रूप में होना देखा गया है | चेतना विकास इसलिए आवश्यक है कि अभी तक जंगल युग से अत्याधुनिक विज्ञान युग तक हर देश काल में मानव व्यक्तिवादी, समुदायवादी विधि से जीता आया है | जीव चेतना में जीते हुए ज्ञानावस्था में होना इस प्रकार प्रमाणित हुआ कि जीवों से अच्छा जीने के लिये जिया, जिसको हम ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी कहते हैं | ये सब जीवों से अच्छा जीते हुए, जीवों से अच्छा जीने के लिये आहार, आवास, अलंकार इसके बाद दूरसंचार को सर्वाधिक विकास माना | विकास का स्वरूप चेतना विकास के रूप में होना विकल्प विधि में पाया गया है | इस विकल्प रूप में जो चेतना विकास होता है उसका अध्ययन करके देखा गया है | मानव, चेतना विकासपूर्वक मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना पूर्वक प्रमाणित होता है | इसे भली प्रकार से अभ्यास करके देखा गया है | इस प्रकार जीव चेतना, मानव चेतना में अंतरित होना ही आज की आवश्यकता हो गयी है क्योंकि अत्याधुनिक युग आने पर अथवा विज्ञान युग आने पर भी मानव संघर्ष

और युद्ध से मुक्त नहीं हो पाया है | धरती बीमार होने से बच नहीं पाया, यही प्रधान मुद्दा है | इस पर विचार करने की आवश्यकता है | यदि यह अंतिम विकास नहीं है तो अंतिम विकास को पहचानना आवश्यक है | विकास को पहचानने के लिये विकल्प विधि ही एकमात्र प्रस्ताव है | विकल्प विधि का जो प्रस्ताव है वह साधना, समाधी, संयम विधि से प्राप्त हुआ है | यह घटना मानव पुण्य से प्राप्त होने के आधार पर मानव को अर्पित है | इसमें मुख्य बात चेतना विकास मूल्य शिक्षा ही है | चेतना विकास से अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में जीने की आवश्यकता बनती है | अन्यथा व्यक्तिवादी, समुदायवादी चेतना में जीने की आवश्यकता बना ही रहता है | इसे भली प्रकार से सर्वेक्षण कर देखा गया है | यह कार्यक्रम प्रधान परिवार सभा रुपी कार्यक्रम में सफल होता है | इसी के आधार पर विश्व राज्य सभा गठित होना सहज है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज